Reg. No. BR/2025/0487469

TEACHERS OF BIHAR

The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

सितंबर 2025 | अंक 13

शिक्षक दिवस विशेषांक

ई-पत्रिका तक पहुँचने हेतु QR कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

padyapankaj.teachersofbihar.org

(शिक्षक दिवस विशेषांक)

आदरणीय पाठकों,

टीचर्स ऑफ़ बिहार परिवार के लिए यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि पद्यपंकज ई-पत्रिका का सितंबर अंक शिक्षक दिवस को समर्पित किया जा रहा है। हर माह यह पत्रिका शिक्षकों की रचनात्मकता, विचारधारा और संवेदनाओं को समाज तक पहुँचाने का कार्य करती है, और इस बार यह अंक विशेष रूप से शिक्षा-जगत के महानायक, भारत के पूर्व राष्ट्रपति, महान दार्शनिक एवं शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को समर्पित है, जिनकी जयंती पर हम शिक्षक दिवस मनाते हैं।

शिक्षक केवल ज्ञान का संचारक ही नहीं होता, बल्कि वह संस्कारों का संरक्षक, विचारों का मार्गदर्शक और भविष्य का निर्माता होता है। उसके आचरण, अनुशासन और समर्पण से ही विद्यार्थी जीवन की दिशा प्राप्त करते हैं। डॉ. राधाकृष्णन का यह विश्वास था कि "राष्ट्र की असली ताकत उसके शिक्षक और विद्यार्थी हैं।" आज जब हम शिक्षक दिवस मना रहे हैं, तो यह अवसर केवल सम्मान का ही नहीं, बल्कि आत्ममंथन का भी है कि किस प्रकार हम शिक्षा को और अधिक सार्थक एवं मानवीय बना सकते हैं।

इस विशेषांक की रचनाएँ शिक्षकों की संवेदनशीलता, सृजनशीलता और प्रतिबद्धता का जीवंत प्रमाण हैं। यहाँ हर शब्द में प्रेरणा की चमक है, हर पंक्ति में कर्तव्य का आह्वान है और हर अभिव्यक्ति में समाज को शिक्षित, सशक्त एवं संस्कारित बनाने का संकल्प झलकता है।

आइए, इस अवसर पर हम सब मिलकर उन सभी शिक्षकों को नमन करें, जिन्होंने अपने ज्ञान, स्नेह और तपस्या से पीढ़ियों को आलोकित किया है।

टीचर्स ऑफ़ बिहार परिवार इस विशेषांक के माध्यम से सभी शिक्षकों को श्रद्धा, सम्मान और हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित करता है।

धन्यवाद सहित

Team Teachers of Bihar

पद्यपंकज काव्य संग्रह

प्रकाशन सहयोग

प्रधान संपादक

राम किशोर पाठक

प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा

संपादक एवं डिजाइन

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

तकनीकी सहयोग

ई o शिवेंद्र प्रकाश सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय

नारायणपुर, बिक्रम, पटना

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रधान संपादक की कलम से

शिक्षक दीपक सा सदा, जलकर करे प्रकाश।
मार्ग दिखाए शिष्य को, छुए शिष्य आकाश।।
साथियों,

पद्यपंकज के सितंबर अंक को "शिक्षक दिवस" विशेषांक के रूप में प्रस्तुत करते हुए मैं फूला नहीं समा रहा हूँ जिसका कारण मेरा स्वयं का एक शिक्षक होना कहा जा सकता है। पूरा सितंबर माह अपने आँचल में अनेकों खूबियों को समेटे रहा। इसी माह हमने हिंदी सप्ताह मनाया और अपनी राष्ट्रभाषा में प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जिसके आप सभी साक्षी रहे हैं। इसी माह में पावन नवरात्र को भी हमने मनाया। तथापि शिक्षक का महत्व कही इन सबसे बढ़कर है। कहते हैं कि शिक्षक के हाथों में निर्माण और प्रलय दोनों पलता है। अतः शिक्षक समाज का सबसे विशिष्ट अंग होता है।

समाज निर्माण एवं उसे दिशा प्रदान करने में एक शिक्षक की भूमिका अतिमहत्वपूर्ण होती है। शिक्षक जब अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा के साथ करते हैं तो राष्ट्र अपने उत्कर्ष को ग्रहण करता है। इस अंक में हम शिक्षकों ने ही अपने कार्यो, संकल्पों, दायित्वों को शब्दों में पिरोकर हार बनाया है और स्वयं के लिए एक आदर्श लक्ष्य का प्रतिमान गढ़ने का प्रयास किया है। हम सभी शिक्षकों एवं रचनाकारों को समाज निर्माण में उनकी प्रतिबद्धता के लिए धन्यवाद देते हैं। और आशा रखते हैं कि बेहतर राष्ट्र निर्माण में अपना सर्वस्व समर्पित कर एक आदर्श शिक्षक के रूप में स्वयं को सदैव प्रतिष्ठापित करेंगे।

प्रिय पाठक वृंद! पत्रिका का यह अंक महज कविताओं का संकलन नहीं है बल्कि शिक्षकों का वह आत्मबोध है जिसकी आभा समस्त शिक्षा जगत के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में स्थापित होगी। यह अन्य शिक्षकों को प्रेरित कर विद्यालयी शिक्षा को सर्वांगीण विकास के साथ-साथ सार्वत्रिक विकास को एक धरातल देगा। वह शिक्षक ही होता है जो शिक्षा रूपी अमृत का पान कराकर, सदैव अपने शिष्यों में सही-गलत का बोध कराकर उन्हें सन्मार्ग प्रदान करता हैं, जिससे छात्र एक उन्नत राष्ट्र के निर्माण में अपना सहयोग देता हैं। शिक्षक सिर्फ शिक्षा प्रदाता हीं नहीं बल्कि शिक्षा का एक पर्याय होता है। एक बार पुनः हम उन सभी शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिनके अमूल्य सहयोग से मैं यह पत्रिका आप तक प्रेषित कर रहा हूँ।

शिक्षक जीवन में कभी, मिलता नहीं विकल्प।
करते निर्माण राष्ट्र का, लेकर नित संकल्प।।

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है—जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ रश्मि प्रभा

संयुक्त निदेशक

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं "पद्यपंकज" पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ स्नेहाशीष दास
विभागाध्यक्ष,
विद्यालयी शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना का शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	गुरु बिना ज्ञान	जैनेंद्र प्रसाद 'रवि'	8
2	शिक्षक	रत्ना प्रिया	9
3	ज्ञान का आधार	धीरज कुमार	10
4	शिक्षक	राम किशोर पाठक	11
5	शिक्षक दिवस	रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'	12
6	शिक्षक का अर्थ	विवेक कुमार	13
7	गुरु की कृपा	भवानंद सिंह	14
8	गुरु वंदना	श्वेता साक्षी	15
9	हम शिक्षक हैं	ख़ुशबू कुमारी	16
10	शिक्षक कहलाए	मधु कुमारी	17
11	शिक्षक हूँ मैं	रुचिका	18
12	शिक्षक हमारे ज्ञान पुंज	अमरनाथ त्रिवेदी	19
13	हम शिक्षक	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी	20
14	हम शिक्षक राष्ट्र प्रणेता हैं	राम किशोर पाठक	21
15	शिक्षक दिवस	हर्ष नारायण दास	22
16	शिक्षक	रत्ना प्रिया	24
17	यादों को छोड़ आते	एस. के. पूनम	25
18	शिक्षक की गरिमा	अमरनाथ त्रिवेदी	26
19	हम शिक्षक शिक्षा की तस्वीर बदल देंगे	उषा कुमारी	27
20	शिक्षक की महिमा	संगीता कुमारी	28

गुरु बिना ज्ञान

ऋषि-मुनि या हों संत,
चाहे कोई भगवंत,
किसी को भी मिला नहीं, बिना गुरु कभी ज्ञान।
कभी हमें मारते हैं,
कभी फटकारते हैं,
फिर वे दुलारते हैं, माता-पिता के समान।
गुरु होते कुंभकार,
माटी का वो शिल्पकार,
विद्या बुद्धि ज्ञान द्वारा, बना देते हैं महान।
शिष्य को निखारते हैं,
जीवन संवारते हैं,
गुरु जैसा दुनिया में, देखा न मैंने इंसान।

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'
म.वि. बख्तियारपुर,
पटना

शिक्षक

अशिक्षित को जो शिक्षित कर दे,
ज्ञान से तम को हर ले,
दृढ़ आशा की किरण देकर,
सुपथ पर ले जाते हैं।
वह शिक्षक कहलाते हैं।
शिक्षक दिनकर-सा उजियारा,
प्रकाशित तम हो सारा,
समाज को परिवर्तित करते,
उचित मार्ग दिखलाते हैं।
वह शिक्षक कहलाते हैं।
माली व कुम्हार वही हैं,
देशनिर्माता सही है,
चरित्रवान बनाने वाले,
ठोंकते, सहलाते हैं।
वह शिक्षक कहलाते हैं।

छात्रों पर स्नेह लुटायें,
गलती पर आंख दिखायें
मंजिल पाने की धुन हो,
लक्ष्य याद दिलाते हैं।
वह शिक्षक कहलाते हैं।
भारत का अस्तित्व तुम्हीं,
छात्र हो, भविष्य तुम्हीं,
तुम सँवारो आज स्वयं को,
धो-पोंछ चमकाते हैं।
वह शिक्षक कहलाते हैं।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी ,नालंदा

ज्ञान का आधार

ज्ञान का आधार है शिक्षक,
बच्चों का प्यार है शिक्षक।
माता-पिता का सम्मिश्रण है,
विद्यार्थियों का संस्कार है शिक्षक।

भाषा का मिठास है,
गणित का सूत्रधार है शिक्षक।
जीवन का मार्ग है,
विज्ञान का आविष्कार है शिक्षक।

जिसमें मधुर लय, सुर, संगीत सजा हो,
जो जीवन में रंग भर दे,वैसा कलाकार है शिक्षक।
बिस्मिलाह खा का शहनाई हैं
बैजू बावरा के तबले की श्रृंगार है शिक्षक

महात्मा बुद्ध की प्रेरणा है,
पापियों का सुधार है शिक्षक।
पाणिनि का ज्ञानपुंज है,
अष्टाध्यायी सा स्वीकार है शिक्षक।

राम को श्री राम बनाया,
विश्वामित्र का जयकार है शिक्षक।
धर्म युद्ध में अर्जुन का सारथी बना,
कृष्ण का अवतार है शिक्षक।

गुरुकुल की परंपरा है,
ईश्वर का सत्कार है शिक्षक।

धीरज कुमार
सर्वोदय+2 उच्च
विद्यालय,अगिआंव (भोजपुर)

शिक्षक

शिक्षक शिक्षा दे सदा, मान इसे निज धर्म।
छात्र समर्पित हो जहाँ, करता अपना कर्म।।
शिक्षक साधक सा सदा, करे साधना रोज।
कंटक पथ चलता हुआ, भरे छात्र में ओज।।

कठिन बड़ा यह कार्य है, संयम रखिए साथ।
शिक्षक के आदर्श का, मिलता है फल हाथ।।
शिक्षक जीवन को सदा, करता दिशा प्रदान।
शिक्षा जिसके केंद्र में, करता कर्म महान।।

मिलिए शिक्षक से सदा, पूछ लीजिए हाल।
पल-पल जो बदला करें, छात्र जगत का चाल।।
शिक्षक अपने कर्म से, नित्य बनाते राह।
छात्रों में नवचेतना, और जगाते चाह।।

कठिन कार्य भी सरल हो, जब शिक्षक का साथ।
नमन करें उस ईश का, जिनका सिर पर हाथ।।
अच्छा लगता है सदा, जिसे छात्र का साथ।
गौरव की गाथा सदा, रहता उनके माथ।।

राष्ट्र निर्माण भाव ले, करते सदा प्रयत्न।
ऐसे शिक्षक ही सदा, होते सच्चे रत्न।।
निज हित इच्छा त्यागकर, रचता रहता काम।
शिक्षक शिक्षा से सदा, करता कार्य तमाम।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला
बिहटा, पटना, बिहार।

शिक्षक दिवस

क्षितिज लाल है भाल हर्षित दिखे।
सितंबर दिवस आज चर्चित दिखे।।
अशिक्षा डगर छोड़ते वे चले।
सु-शिक्षा डगर जोड़ते वे चले।।
उन्हीं के दिवस पर चलो कुछ करें।
बहे भाव सुंदर सभी में भरें।।
बड़े शील वाले बड़ी सादगी।
खिला चेहरा में खिली ताजगी।।
मुरेठा बँधा शीश पर खास है।
प्रभा चंद्र देखा शिखर वास है।।
सटा नाक चश्मा बड़ा शोभता।
विचारें गँदी को वहीं रोकता।।

पहनकर चलें धोतियाँ सर्वदा।
पहन वस्त्र वे भिन्न रखते सदा।।
मगर सोंच रखते सभी से जुदा।।
रचा था उन्हें तो अलग से खुदा।।
दिए वर्ष चालीस शिक्षधाम के।
दिए दर्श जो भी बड़े काम के।।
कलमकार होकर हमें जो दिए।
बड़े विज्ञ उनकी प्रशंसा किए।।
जमाना कहा कद्र है लाजमी।
जमीं आसमा छू गया आदमी।।
कलम ही लिए है रहा घूमता।
दिवाकर उतरकर कलम चूमता।

रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'
मध्य विद्यालय दरवेभदौर

शिक्षक का अर्थ

शिक्षक समाज के होते दर्पण,
शिक्षा का वो करते अर्पण,
बच्चों को देते हैं ज्ञान,
शिखर पर पहुँचना उनका काम,
कच्ची मिट्टी से घड़ा बनाते,
तपाकर उसे मूल्यवान बनाते,
शिल्पकार कहूँ या कहूँ रचनाकार,
बच्चों के वो है सृजनकार ,
मिट्टी को सोना बना दे,
भटके को राह दिखा दे,
क्षमा का जिनके अंदर भाव,
बच्चों के लिए लेते तनाव,
न धन का लोभ न अपनी फिकर,
बच्चों के संग रहते तत्पर,
शैक्षिक संग अनुशासन का पाठ पढ़ाते,
अपनेपन का सदा भाव जताते,
मुस्कुराकर वर्ग कक्ष में आते,
बच्चों का वो ज्ञान बढ़ाते,
संग सभी के घुलमिल जाते,
मानवता का पाठ पढ़ाते,
क्षमादान से बढ़ता मान,
कमजोरी दूर करना उनकी शान,
यही है उनकी पहचान,
तभी तो जग कहता महान,
ब्रह्म विष्णु महेश्वर जिनका नाम,
सर्वपल्ली राधाकृष्ण ने दिलाई पहचान,
बताया जग को क्यूँ हैं बच्चों के भगवान।

विवेक कुमार
भोला सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय पुरुषोत्तमपुर
कुढ़नी, मुजफ्फरपुर

गुरु की कृपा

आज करूँ आभार हृदय से
गुरु की बारंबार,
जिसने किए क्षमा हमारे
अगणित अपराध।

माटी की मूरत जैसा
था मेरा आकार,
गुरु का सानिध्य पाकर
सीखा मैंने संस्कार।

था अज्ञानी मूढ़ बालक मैं
ज्ञान प्रकाश हमें दिखाया,
करूँ मैं वंदन ऐसे गुरु की
जिसने जीवन आसान बनाया।

कॉंटों से भरा था जीवन
जीवन जीने का कला सिखाया
करूँ नमन मैं उस गुरु को
जीवन में जो उत्साह जगाया।

संस्कार,अनुशासन का पाठ पढ़ाया
सफल जीवन का मंत्र बताया,
करूँ मैं पूजा ऐसे गुरु की
जिसने हमें इंसान बनाया।

भवानंद सिंह
मध्य विद्यालय मधुलता
रानीगंज, अररिया

गुरु वंदना

आओ कर लें गुरुओं का गुणगान
गुरुओं से है अपनी ये पहचान
नादान थे,अंजान थे,
दे शिक्षा किया जीवन को आसान
गुरुओं से है.......
(1) बाधाओं से पार निकाला है,
कदम कदम पे हमको संभाला है
जब भी आई जीवन मे दुविधा
चुटकी में उलझन से निकाला है।।
आओ सभी, कर लें अभी
इन गुरुओं का सम्मान
शीश झुकाएं और करें प्रणाम
आओ कर लें.....

2) संघर्षों की बात हैं समझाते
दुनियां में जीना भी सिखलाते
जगमग हो जाये शिक्षा से जीवन
ज्योति बनकर खुद भी जल जाते
स्वरा जान लो,ये मान लो
इनके आगे छोटे हैं भगवान
ईश्वर का दिया इन्होंने हमको ज्ञान।।
आओ कर लें गुरुओं.....

श्वेता साक्षी
मध्य विद्यालय हाजीपुर आवासबोर्ड खगड़िया

हम शिक्षक हैं

हम शिक्षक हैं

समय पर विद्यालय जाते
बच्चों को मन से पढ़ाते
अच्छी अच्छी बात बताते
समाज में रहना सिखलाते
हम शिक्षक हैं।

श से बच्चों को शिष्ट बनाते
क्ष से क्षमा करना सिखलाते
क से कलम की ताक़त समझाते
बच्चों को उनके अधिकार बताते
हम शिक्षक हैं।

हर संकट को गले लगाते
आशा की एक किरण जगाते
बच्चों की सफलता पर भी
खुशी के आंसू छलकाते
हम शिक्षक हैं।

खुशबू कुमारी
मध्य विद्यालय गोला पंचायत
जे पी कॉलोनी मुजफ्फरपुर

शिक्षक कहलाए

बातें ज्ञान की जो सिखलाए
देखो बच्चों वो शिक्षक कहलाए......

प्रथम गुरु है माता महान
सदा करो इनका सम्मान
कदम-कदम चलना सिखलाए
जीवन की सच्ची राह दिखलाए......

.

शिक्षा का अलख गुरुदेव जलाए
सत्य मार्ग पर चलना सिखलाए
दीप ज्ञान का सदैव जलाकर
अज्ञानता को दूर भगाए........

अच्छे बुरे की समझ जगाए
आसमां में उड़ना सिखलाए
फिर पंखों रहती परवाह किसे
हौसलों की उड़ान जो उड़ना सीख जाए।

मधु कुमारी
नया प्राथमिक विद्यालय बँधकत्ता , बेलवाड़ी कटिहार

शिक्षक हूँ मैं

अनगढ़ माटी को मैं आकार दूँ,
बिगड़ी को सदा ही सँवार दूँ,
वर्ण,अक्षर ,शब्द से परिचय करा
वाक्य का मैं सदा विस्तार दूँ।

शिक्षक हूँ शिक्षा का अलख जगाऊँ,
सही गलत का फर्क सदा समझाऊँ,
हर मुश्किल का हल खोजूं मैं
हर समस्या का मैं निदान कराऊँ।

इतिहास की बातें मैं बताऊँ,
विज्ञान के खोज मैं ही दिखाऊँ,
नियम,कानून का ज्ञान कराकर,
जीवन सरल मैं ही बनाऊँ।

शिक्षक हूँ हर क्षेत्र से परिचय करा,
सारी अनभिज्ञता दूर कर जाऊँ।
जीवन जीने का गुर बताकर,
जीवन के लिए आदर्श स्थापित कर जाऊं।

रूचिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुरमौली
गुठनी सिवान

शिक्षक हमारे ज्ञान पुंज

कौन कहता शिक्षकों के बिना ,
तकदीर हम सबकी बनेगी ?
कौन कहता शान में ,
इनके बिना सही जिंदगी कटेगी ?
ज्ञानपुंज के बिना क्या ,
रौशनी कभी हमें मिलेगी ?
उनके बिना कोई बात भी क्या ,
धरती से गगन तक कभी खिलेगी ।
समता नहीं कोई उनके समान ,
ज्ञान मन में न भर सकेंगे ।
समता नहीं कोई उनके जैसा ,
प्यारे छात्रों का न दिल जीत सकेंगे ।
नजरिए का सुपरिणाम है ,
जो जितना खिला उतना ही अच्छा ।

रहकर शिक्षकों के बीच में ,
सोना से भी कुंदन बना है सच्चा ।
कठिन लक्ष्यों को पाने में ,
शिक्षक ही है जो दम दिखलाते ।
वे ही मुश्किल घड़ियों में भी ,
साहस और धैर्य सिखलाते ।
जीवन के अनगिनत राहों में ,
वे प्रकाश सम ज्ञान पुंज होते ।
वे ही जीवन के स्तंभ स्वरूप ,
शक्ति के भी नव कुंज होते।
महिमा इनकी इतनी है कि
सदा ज्ञान की गंगा बहाएँ।
उठने से सोने तक की क्रियाओं को ,
जीवन में रुचिकर सदा बनाएँ ।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक

हम शिक्षक

धीरे धीरे मैं गढ़ती हूँ, घर घरौंदा आदिम सब,
जाने जैसे कैसे लिखती वर्ण व आख़र आखिर सब।
कोमल निर्मल मन पर लिखती खेल खिलौने बाकिर सब,
जाने ऐसे वैसे लिखती बच्चों के जज्बाती सब।

कोरा पन्ना कोरी फ़ितरत कोर न छोड़ी बाकी सब,
आखिर कैसे कैसे गढ़ गई लपट अँगूठा बाकी सब।
मीरा और रसखान रचा है, रहा कहाँ कोई बाकी अब,
शंकर और कलाम रच दिया अवनि व्यमिका कविता सब।

मैं शिक्षक रचती बसती हुँ नहीं कही कोई बाकी अब।
तन मे मन मे और जीवन मे मेरा ही सब बाकी अब,
मानव को मानव बनवाती नहीं कोई है थाती अब।
मैं शिक्षक बस होम हो जाती बच जाती है राखी अब।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज कटिहार

हम शिक्षक राष्ट्र प्रणेता हैं

हम शिक्षक राष्ट्र प्रणेता हैं।
हम पल-पल के अध्येता हैं।।
हम ही समाज के नेता हैं।
दुख दर्द सभी के क्रेता हैं।।

हम नवल राह के निर्माता।
कहते हमको भाग्य विधाता।।
बच्चों से है अद्भुत नाता।
जीवन का हर पाठ पढ़ाता।।

अक्षर की गूँज सिखाते हैं।
हर भेद उन्हें समझाते हैं।।
हम शिक्षक जो कहलाते हैं।
अपना सर्वस्व लुटाते हैं।।

ममता चित में हम रखते हैं।
पीड़ा सारी हम सहते हैं।।
बच्चों के हित में रहते हैं।
तभी सफलता को गहते हैं।।

बच्चों से पहचान हमारी।
उनसे ही मुस्कान हमारी।।
सफल शिष्य से शान हमारी।
बस इतनी सी ध्यान हमारी।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा,
पटना, बिहार।

शिक्षक दिवस

शिक्षक नहीं है सामान्य व्यक्ति, वह तो शिल्पकार होता है।
गीली मिट्टी को सँवारने वाला कुम्भकार होता है।।

उसने ही श्रीराम गढ़े हैं, वह ही श्रीकृष्ण निर्माता।
वह ही समर्थ रामदास है, क्षत्रपति सा शिवा प्रदाता।

दयानन्द, विवेकानन्द को उसका शिल्प सँवार देता है।।
वह साँचा होता है जिसमें, महामानव ढाले जाते हैं।

और राष्ट्र के नररत्नों के सुखद स्वप्न पाले जाते हैं।
छात्रों में मानव मूल्यों का वह ही प्रवेश द्वार होता है।।

उसके चिन्तन पर, चरित्र पर सम्राटों के सिर झुकते हैं।
धर्म, समाज, राष्ट्र के उलझे प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं।

श्रेष्ठ राष्ट्र-निर्माता होता, वह ऋषितुल्य विचार होता है।।
लेकिन उसके शिल्पकार को, जाने क्या हो गया इन दिनों।

उसका चिन्तक और मनीषी जाने क्यों सो गया इन दिनों।
उसके गौरव पर, गरिमा पर आए दिन प्रहार होता है।।

वह व्यसनों का दास हो गया, और अर्थ ही लक्ष्य बनाया।
आचारों से शिक्षण देने का आचार्य नहीं रह पाया।

शिक्षक दूषित राजनीति का आए दिन शिकार होता है।।
छात्र कहाँ सम्मान करेंगे, उनसे यारी गाँठ रहा है।

अभिभावक आदर क्या देंगे, स्वार्थसिद्धि का दास रहा है।
शिक्षक "शिक्षक-दिवस" मनाए, यह उल्टा व्यवहार होता है।।

"शिक्षक-दिवस" तभी सार्थक है, शिक्षक अपना मूल्य बढ़ाए।
जनमानस भी श्रद्धानत हो उसके प्रति आभार जताए।

शिक्षक श्रद्धापात्र जहाँ है, वहाँ राष्ट्र निखार होता है।।
आएं विवेकानंद, चन्द्रगुप्त खोज निकालें, उसे छत्रपति बनाएँ।
भारत को दुनिया में विश्वगुरु बनाएँ।।

हर्ष नारायण दास
मध्य विद्यालय घीवहा(फारबिसगंज) अररिया

शिक्षक

अशिक्षित को जो शिक्षित कर दे,
ज्ञान से तम को हर ले,
दृढ. आशा की किरण देकर,
सुपथ पर ले जाते हैं।
वह शिक्षक कहलाते हैं।

शिक्षक दिनकर-सा उजियारा,
प्रकाशित तम हो सारा,
समाज को परिवर्तित करते,
उचित मार्ग दिखलाते हैं।
वह शिक्षक कहलाते हैं।

माली व कुम्हार वही हैं,
देशनिर्माता सही है,
चरित्रवान बनाने वाले,
ठोंकते, सहलाते हैं।
वह शिक्षक कहलाते हैं।

छात्रों पर स्नेह लुटायें,
गलती पर आंख दिखायें
मंजिल पाने की धुन हो,
लक्ष्य याद दिलाते हैं।
वह शिक्षक कहलाते हैं।

भारत का अस्तित्व तुम्हीं,
छात्र हो, भविष्य तुम्हीं,
तुम सँवारो आज स्वयं को,
धो-पोंछ चमकाते हैं।
वह शिक्षक कहलाते हैं।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी ,नालंदा

यादों को छोड़ आते

पावन दिवस पाँच,
सितंबर हर साल,
विद्यार्थी के जीवन को,हर्षित कर जाते।

जमावड़ा है शिष्यों का,
गुलदस्ता है फूलों का,
शिक्षार्थी के आँगन से,जाते हैं जुड़ नाते।

आचार्य के सानिध्य से,
जीवन का अंधकार,
मिट जाते धीरे-धीरे,और प्रकाश पाते।

गगन हो या भूतल,
जगा जाते हैं नींद से,
कर्मवाद पढ़ा कर,यादों को छोड़ आते।

एस.के.पूनम
प्रा.वि.बेलदारी टोला
फुलवारी शरीफ,पटना

शिक्षक की गरिमा

शिक्षक की गरिमा है अपनी ,
सबके अपने अपने संस्कार हैं।
अपनी अपनी विद्वता है उनकी ,
यही देते अनुपम उपहार हैं।

शिक्षक के बिना ज्ञान न होता ,
शिक्षक ही बच्चों के कुम्भकार हैं।
शिक्षक की गरिमा संपूर्ण विश्व में ,
यही सर्वोत्तम ज्ञानों के भंडार हैं।

शिक्षक ही ऐसे होते जो ,
माता पिता से भी महान हैं।
जिन्हें शिक्षक अच्छे हैं मिलते ,
सच में वे बड़े भाग्यवान हैं।

माटी से सोना बनाना ,
उनके ही कर की बात है।
शिक्षक का जो आदर करता ,
नहीं होता उसका कोई घात है।

शिक्षक का बड़ा दायित्व है ,
बच्चों में नित ज्ञान भरना।
जो छात्र बढ़ रहे नित आगे ,
उन्हें सहज संज्ञान करना।

शिक्षक ही हैं ज्ञान के सागर ,
वे ही शिक्षा का अलख जगाते हैं।
ज्ञान विज्ञान की तमाम रश्मियों को ,
वे ही छात्रों के पास बुलाते हैं।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक

हम शिक्षक शिक्षा की तस्वीर बदल देंगे

हम शिक्षक हैं, शिक्षा की तस्वीर बदल देंगे
भारत के हर बच्चों की तकदीर बदल देंगे।
हम एक नई कहानी लिखेंगे, नया इतिहास बनाएँगे
शिक्षित हो हमारा समाज, ऐसा विहान लायेंगे ।
हम शिक्षक हैं, शिक्षा की तस्वीर बदल देंगे।।
न कोई अनपढ़ कहलाएगा, न कोई अंगूठा लगाएगा
हर घर में शिक्षा की अलख जागेगी, विद्वान और ज्ञानी हम कहलाएँगे।
हम शिक्षक हैं शिक्षा की तस्वीर बदल देंगे।।
अँधेरों से निकालकर, हम ज्ञान की रौशनी फैलाएँगे,
शिक्षा का महत्व, जन जन तक पहुंचाएंगे
पूरे विश्व में हमारा परचम लहराएगा।
हम शिक्षक हैं शिक्षा की तस्वीर बदल देंगे।।
हर जगह अपनी चर्चा होगी, अपना बोलबाला होगा,
देश के हर घर में एक प्रयोगशाला होगा,
चाँद का केवल एक कोना नहीं, पूरा चाँद अपना कहलाएगा।
हम शिक्षक हैं शिक्षा की तस्वीर बदल देंगे।
भारत के हर बच्चों की तकदीर बदल देंगे
तकदीर बदल देंगे।।

उषा कुमारी
प्राथमिक विद्यालय महिनाथपुर
झंझारपुर, मधुबनी

शिक्षक की महिमा

शिक्षक हैं हम, शिक्षा की ज्योति जलाएँगे,
देश-धर्म और जात-पात से, हम ऊपर उठ जाएँगे।
समता का नवगीत रचेंगे, ज्ञान का अलख जगाएँगे,
शिक्षक हैं हम, शिक्षा की ज्योति जलाएँगे।

गुरु आपकी ये अमृत वाणी,
हमेशा मुझको याद रहे।
जो अच्छा है जो बुरा है,
उसकी हम पहचान करे।

शिक्षक का योगदान

बच्चों के भविष्य को सजाते हैं शिक्षक,
ज्ञान के प्रकाश को जलाते हैं शिक्षक।
काँटों भरी कठिन डगर में,
चलना हमें सिखाता कौन?

शिक्षक को नमन

शिक्षक आज तुम्हें नमन है,
आबाद आज तुमसे चमन है।
विद्या देते दान गुरूजी,
हर लेते अज्ञान गुरूजी।

शिक्षक की भूमिका

शिक्षक हैं मार्गदर्शक हमारे,
जीवन की राह दिखाते हैं।
ज्ञान की बातें जो सिखलाता,
गुरु हमारा वह कहलाता।

संगीता कुमारी
उत्क्रमित प्लस टू उच्च विद्यालय मलमल, प्रखंड –
कलुआही जिला -मधुबनी, बिहार

पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com

padyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010

Reg. No. BR/2025/0487469

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें